''और तक़्वे का पहनावा ही अच्छा भला है।''

(सूर–ए–आराफ़)

घर और समाज में ख़ुदा का डर (तक़्वा)

(पिछले शुमारे से आगे)

हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

तक़्वे (संयम) की असलियत

तक़्वा अरबी शब्द है जो 'वक़ा' से निकला है। 'वक़ा' के माने ख़ुद को बचाए रखने और ख़ुदा की हराम की हुई चीज़ों से बचे रहने और परहेज़ करने का है।

तक़्वा सच में एक ऐसा हौसला और ताक़त है जो गुनाह छोड़ने और हराम व बुराईयों की लत अपनाने के मज़े से अपने को बराबर रोके रखने की मश्क़ से मिलता है। तक़्वा अपना लेने और अपने को गुनाहों से बचाये रखने का हौसला पैदा करना बहुत बढ़िया क़दम और बड़ा प्यारा काम है। तक़्वा अपनाना एक ऐसी इबादत है जो ख़ुदा के हुक्म से की जाती है। इससे ख़ुदा ज़रूर ख़ुश होगा। बदन की, माल की और आचरण की व नैतिक (Moral) इबादत का फ़लसफ़ा आदमी की ज़िन्दगी में तक़्वे को उभारना है। जिस इबादत से तक़्वा पैदा न हो वह इबादत नहीं है। तक़्वा बड़ाई की बुनियाद, शराफत की जड़, सफलता की गारण्टी और आख़िरती भलाई की कुन्जी है।

समाज हज़ारों घरानों से मिलकर बनता है। घराना मियाँ–बीवी और कुछ बच्चों से मिलकर बनता है। असल में घराने और समाज का आधार लोग ही होते हैं। अगर एक–एक आदमी तक़्वे वाला और संयमी बन जाये ता सही घराना और नेक समाज वजूद में आ जाये जिसके अन्दरूनी और बाहरी माहोल में अमन चैन का राज होगा। उसके लोगों की आदमियत पूरी होने के लिए मनचाही ज़मीन बराबर होगी। नतीजे में ऐसा समाज वजूद में आ जायेगा जिसका एक–एक आदमी एक–दूसरे का भला चाहने वाला होगा और सभी एक दूसरे को नुक़सान पहुँचाने से बचे रहेंगे।

तक़्वे वालों से ख़ुदा मुहब्बत करता है, नबी व इमाम उन्हें दोस्त रखते हैं और वही लोग भले, शरीफ़ उपयोगी और बड़े होते हैं। तक़्वे वाले बड़े अच्छे किरदार के मालिक होते हैं। उनके चेहरे से ख़ुदा का नूर टपकता है, वह बहुत अच्छे चलन, उत्तम आचरण और अच्छाइयों को अपनाते हैं और हर बुराई व गुनाह से अलग–थलग रहते हैं।

आदमी, ख़ानदान और समाज की इज़्ज़त ख़ुदा के तक़्वे में ही है। ख़ुदा के नज़दीक तक़्वे वालों से ज़्यादा कोई आदमी, घराना या समाज इज़्ज़त वाला नहीं है।

मियाँ बीवी को माँ–बाप औलाद को और समाज के दूसरे लोगों को आपस में जो एक–दूसरे से नुक़सान पहुँचते हैं वे तक़्वा न होने की वजह

से पहुँचते हैं। घरों में और लोगों में एक–दूसरे से जो डर, वहशत रहती है वह भी तक़वा न होने के कारण है। लोगों की ज़िन्दगी से जुड़े मुद्दों में जो बेपनाह नुक़सान दिखायी देते हैं वह भी तक़वा न होने की वजह से होते हैं। वाक़ई एक आदर्श (Ideal) घराना बनाने के लिए मियाँ–बीवी पर वाजिब है कि वे ख़ुद तक़वा अपनायें और यह भी ज़रूरी है कि वे तक़वे को अपनी नसलों (Generations) में पहुँचायें और शुरु से ही अपनी औलाद में तक़वा पैदा करने की कोशिश करें।

अच्छा होगा कि आप तक़वे के बेपनाह फ़ायदों को क़ुर्आन मजीद की आयतों और रिवायतों में देखें। फिर अन्दाज़ा लगायें और सोचें कि अगर सारे लड़के–लड़कियाँ तक़वे से सज–संवर जायें और फिर इस रूहानी पूँजी से शादी करें तो कितना अच्छा घर और समाज वजूद में आ जायगा।

तक़वा और उसके दर्जे

क़ुर्आन मजीद में जो लोग सूझ–बूझ रखते हैं और जिन्होंने रूहानी ऊँचाईयाँ पा लीं हैं, वे तक़वे की तीन दर्जे श्रेणियाँ बताते हैं :–

1– ख़ासमख़ास तक़वा

2– ख़ास तक़वा

3– आम तक़वा

हज़रत इमाम जाफर सादिक़ (अ0) इन तीनों दर्जों को एक रिवायत में इस तरह साफ–साफ बयान करते है :–

''पहला दर्जा 'बिल्लाह फील्लाह' तक़वा (ख़ुदा से ख़ुदा के लिए ख़ुदा में डर), यह हलाल चीज़ों के इस्तेमाल न करने का नाम है, शक शुब्हे वाली चीज़ों की तो बात ही नहीं। दूसरा दर्जा 'मिनल्लाह' (ख़ुदा से तक़वा) तक़वा है। यह हराम तो क्या शुब्हे वाली चीज़ों से बचने को कहते है। यह ख़ास तक़वा है। तीसरा दर्जा जहन्नम के और ख़ुदा के दुखद व पीड़ा देने वाले अज़ाब (के डर) की वजह से पैदा होता है। यह सभी गुनाहों और हराम चीज़ों को छोड़ने का नाम है। इसको आम तक़वा कहते हैं।''

(मवाएज़े अददिया पेज–180)

साफ़ रहे कि इमाम जाफर सादिक़ (अ0) की हदीस में जो हलाल छोड़ने की बात आयी है उसका मतलब यह है कि ऐसा तक़वा रखने वाले बहुत सी हलाल चीज़ों के पीछे भी नहीं दौड़ते हैं क्योंकि वह उनकी ज़रूरत महसूस नहीं करते और उन्हें जिन हलाल चीज़ों की ज़रूरत होती है उनमें भी कम से कम काम लेकर राज़ी ख़ुशी रहते हैं। हर आदमी इस तरह थोड़े पर राज़ी रह सकता है। अगर कोई यह कहे कि मुझमें यह करने की सकत नहीं हैं तो यह बात मानने के क़ाबिल नहीं है। हलाल में भी थोड़े पर राज़ी–ख़ुशी रहना और ज़िन्दगी की भौतिक (Material) चीज़ों को कम से कम इस्तेमाल में लाना, शान्दार मकान बनाने से बचना तथा महंगी सवारी ख़रीदने, भारी क़ीमत वाला कपड़ा बनाने और दस्तरख़ान या डाइनिंग टेबल (Dining Table) पर तरह–तरह के खाने चुनना, इन बातों से बचना एक नैतिक (Moral) ज़िम्मेदारी और चहीता काम है, इससे ज़िन्दगी की मामलों में ख़ुदा का तक़वा पैदा होता है।

(जारी)